<u>मानव जाती, मानव धर्म</u>

मानव धर्म के बारे में, तीन आशय समाहित हैं| विकसित चेतना में जीता हुआ मानव, देव मानव, दिव्य मानव का अध्ययन है | चेतना के सन्दर्भ में चार भाग में अध्ययन है: जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना | जीव चेतना विधि से सम्पूर्ण अपराध मानव कर्ता हुआ देखने को मिला, उसका गवाही शिक्षा में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद ही शिक्षा | हर अभिभावक अपने संतान को सुशील देखना चाहता है, हर देश काल में| उक्त प्रकार के तीनो उन्माद का शिक्षा देते हुए सुशील रहना कितना संभव है, हर अभिभावक सोच सकते है| विकसित चेतना के प्रमाण में यही आचरण में पाया जाता हैं की समाधान, समृद्धी, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण है | सहअस्तित्व में अनुभव का यह प्रमाण हैं| सहअस्तित्व (*'अस्तित्व', 'जो भी है'*) अध्ययनगम्य हो चुकी है| ऐसे सहअस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से सोचा गया विचारों का प्रमाण, नियम-नियंत्रण-संतुलन; न्याय-धर्म-सत्य रूप में व्यवहार में प्रमाणित होता हैं|

अनुभव मूलक विचार शैली सम्मत व्यवहार में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में प्रमाणित होता हैं| इसे जीके, प्रमाणित करके देखा हैं| जिसका प्रयोजन अखंड समाज-सार्वभौम व्यवस्था है| इसके लिए ऊपर कहे गए आचरण विधि से वर्तमान में विश्वास होना होता है, फलस्वरुप अखंड समाज होता है| अखंड समाज व्यवस्था ही '१० सोपनीय विधि' से परिवार सभा मूलक व्यवस्था होता है| यही सार्वभौम व्यवस्था है| यही विकसित चेतना का फल परिणाम है जिसमे भागीदारी हर व्यक्ती का होना होता है|

- व्यक्ती में समाधान
- परिवार में समाधान, समृद्धी
- समाज में अखंडता
- व्यवस्था में सार्वभौमता

सहज प्रमाण ही भ्रम मुक्त, अपराध मुक्त मानव का स्वरुप है| इस प्रकार के मानव तैयार होना ही, इस प्रकार से नर नारी तैयार होना ही अपराध मुक्त, भ्रम मुक्त मानव जात का पहचान है| मानव जाती एक होने के मूल में काले, भूरे, गोरे और विभिन्न नस्ल समेत पाए जाने वाले मानव जात में खून के प्रजातियों का समानता के

आधार पर, शरीर रचना में समाहित हड्डियों क्र आधार पर, अंग और अव्व्यों के आधार पर एक होना, इन सबका संयुक्त रूप में नाखून, दांत, के बनावट तीखे होना, खून के प्रजातियां निश्चित होना और आतों में मांसाहारी जात के जीवों का आंते छोटे होना, शाकाहारी जीवों के आंते लंबी होना, इन्ही आधारों पर मानव जाती एक होना अध्ययनगम्य हो चुकी है| मानव सुख धर्मी है, समाधान ही मानव धर्म है| समाधान समझदारी से होता है, समाधान से ही मानव सुख का अनुभव कर्ता है, यही मानव धर्म है| यह अध्ययनगम्य हो चुकी है| छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग इसे अध्ययन कर रहा है| इस प्रकार शरीर रचना के आधार पर मानव जाती एक है, एवं समाधान (समझदारी) के आधार पर मानव धर्म एक है (सुख)| इसी के आधार पर मानव जाती एक, धर्म एक होने का प्रतिपादन २३ अप्रैल २०१२ को होगी| मानव जाती एक, धर्म एक होने के आधार पर अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में ‘मानव मंदिर’ का स्थापन ग्राम करौली, कानपूर, उत्तर प्रदेश में हुआ है| जय हो, मंगल हो, कल्याण हो !

- **ए नागराज,** प्रणेता, मध्यस्थ दर्शन - सह-अस्तित्ववाद , अमरकंटक, जि अनूपपुर, म.प्र. भारत

- अधिक जानकारी के लिए ण्उंकीलेंजीण्पदवि देखें